सौवां नाम

सौवां नाम

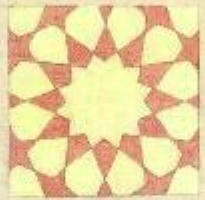

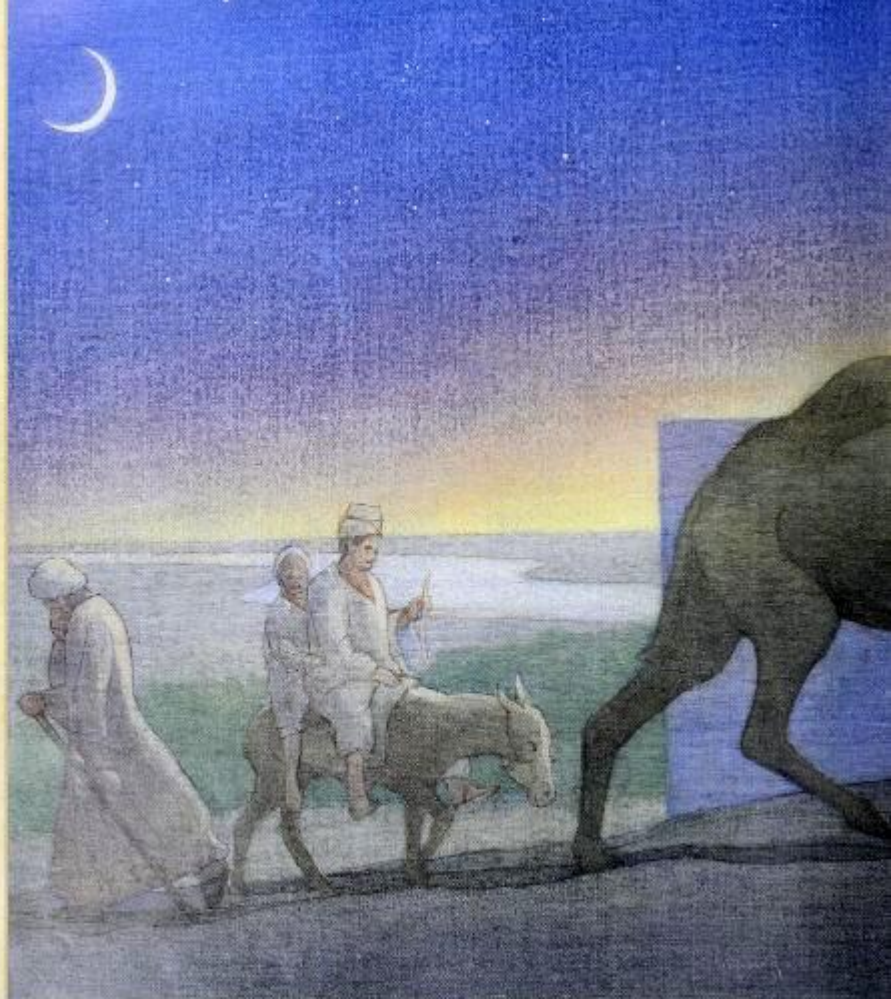

सौवां नाम

San Rafael Public Library
1100 E Street
San Rafael, CA 94901

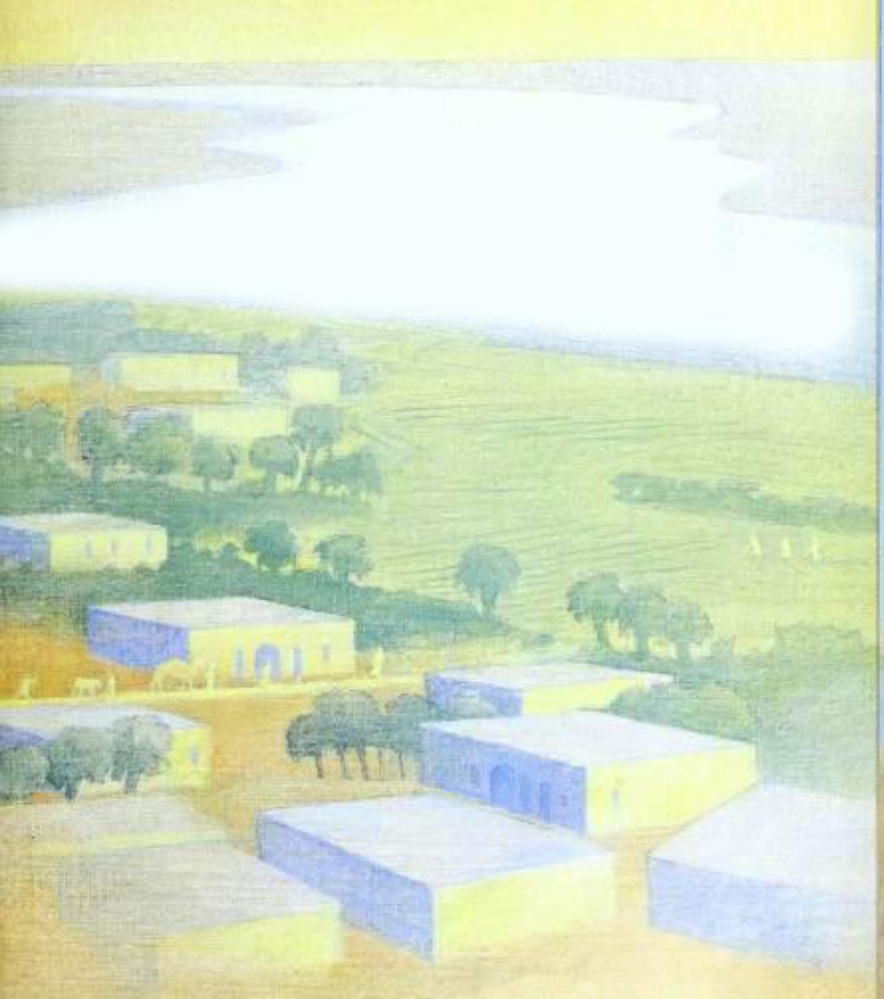

सैंकड़ों वर्ष पहले, उस देश में जहां के राजाओं को एक समय फराऊन बुलाया जाता था और जहां की विशाल नदी को आज भी नील नदी कहा जाता है, वहां नदी किनारे स्थित एक छोटे-से गाँव में सालाह नाम का एक लड़का रहता था जो उदास रहता था.

सालाह इस कारण उदास न था की उसका घर धूप में पकी मिट्टी की ईंटों का बना था. वह तो अच्छी बात थी. मिट्टी की ईंटें घर को सर्दियों में गर्म और गर्मियों में ठंडा रखती थीं. वहां सब के लिए जगह थी, उसकी माता और पिता और पाँच बड़ी बहनों के लिये, उस भूरे गधे के लिए जिसकी पूँछ और टाँगे हल्के भूरे रंग की थीं, उन दो पिल्लों के लिए जिनके नाक नुकीले और कान पिरामिड जैसे थे.

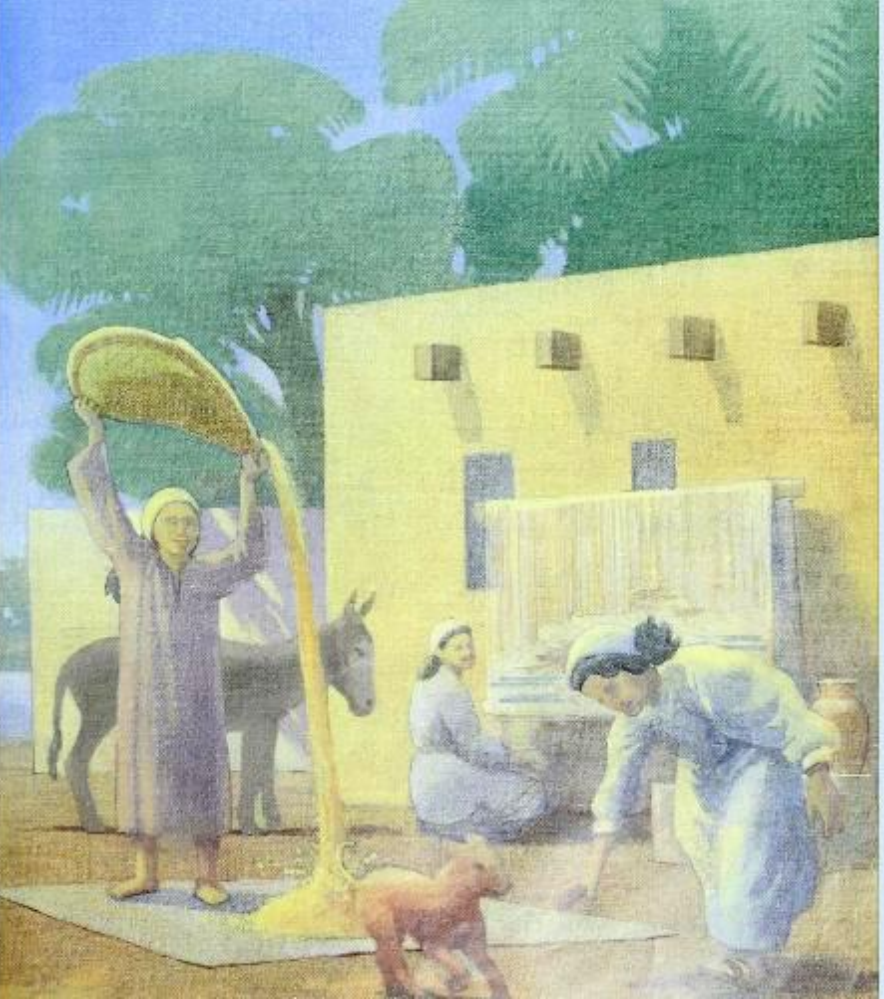

वह इस लिये उदास न था कि मौसम खराब रहता था. आकाश सदा नीला होता था. जब भी आकाश में बादल घिर आते थे तो वह गुलाबी और बैंगनी रंग के होते थे. उसके पिता के खेतों में, जहां गेहूँ, जौ, मेथी और मक्का लगा था, सूर्य का प्रकाश फसल को हरा-भरा रखता था. खेत की काली मिट्टी में बनी नालियों से नदी का पानी बहता रहता था. खेत की सिंचाई करने के लिए इन नालियों को बनाने में सालाह ने अपने पिता की सहायता की थी.

आज सुबह सालाह नदी किनारे एक खजूर के पेड़ के नीचे बैठा था, पेड़ के पत्ते ज़मीन तक झुके हुए थे. नदी में धीरे-धीरे चलती नावों को वह देख रहा था. उसके पास ही एक ऊँट था. वो इस ऊँट के कारण ही उदास था.

उस ऊँट का नाम था, बूढ़ा क़दीम. लेकिन क़दीम बिलकुल भी बूढ़ा नहीं था. उसकी आयु सिर्फ सात वर्ष थी. सालाह के जन्म से कुछ सप्ताह पहले ही उसका जन्म हुआ था. सालाह के पिता ने उसका ऐसा नाम रखा था "क्योंकि, बेटे, जन्म के समय ही एक ऊँट बूढ़ा दिखाई देता है. उसकी ओर देखो. गाँव में जो अन्य ऊँट हैं उनको देखो. सब एक जैसे दिखते हैं. सिर्फ उनका आकार अलग-अलग होता है."

जब सालाह ने क़दीम के चेहरे की ओर देखा तो उसे महसूस हुआ कि उसके पिता सच बोल रहे थे. लेकिन उसे कुछ और भी दिखाई दिया-उदासी. "तुम अपना सिर इसलिये लटकाकर रखते हो क्योंकि तुम उदास हो, क़दीम!" लड़के ने ऊँट के कोहान से अपना गाल रगड़ा. "क्या इसी कारण सब ऊँट सिर लटका कर रखते हैं?"

ऊँट ने सालाह की टाँग पर अपनी नाक रगड़ी. लड़का हिला नहीं. नदी के बीच में स्थित एक रेतीले टीले पर सरकंडों के निकट स्थिर खड़े बगुलों के आसपास ग्रीनशैंक और वैगटेल पक्षी यहाँ-वहां फुदक रहे थे. सुहावना दिन था. लेकिन सालाह को कुछ अच्छा न लग रहा था. क़दीम प्रसन्न न था और सब पशुओं में सालाह को वही सबसे प्रिय था. दोनों इकट्ठे काम करते थे. दोनों इकट्ठे सोते थे. वह दोनों भाइयों जैसे थे.

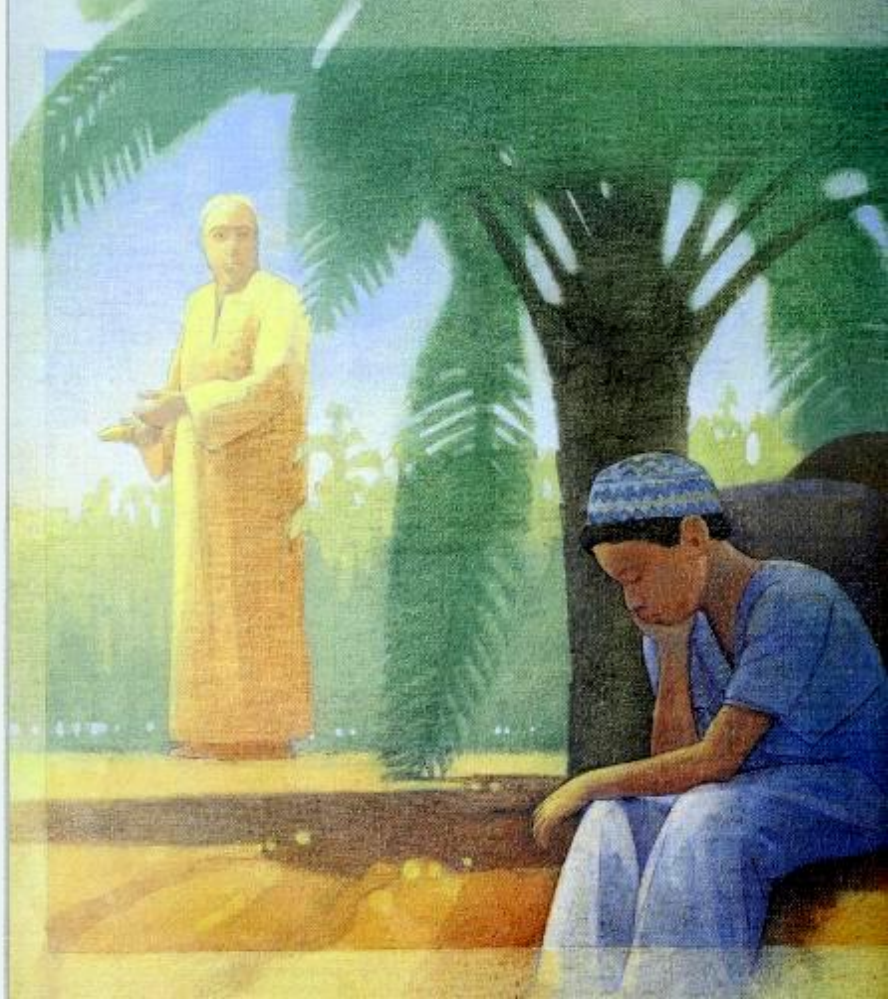

"तुम्हें क्या हुआ है, सालाह?" उसके पिता ने मक्के के पौधों के पीछे से आते हुए पूछा. "तुम इस ऊँट जैसे बनते जा रहे हो, सिर लटकाये रखते हो, घिसट-घिसट कर चलते हो....." यह बात कहते-कहते उन्होंने एक भुट्टे का छिलका ज़ोर से नीचे खींचा.

"सब ठीक है, क़दीम." सालाह ने ऊँट की नाक थपथपाते हुए कहा. "तुम जानते ही हो कि पिता कैसे हैं. तुम्हारे बिना उनका काम नहीं चल सकता. हमारा किसी का भी नहीं."

जब भी क़दीम बात समझ जाता था तब वह अपनी पलकें झुका लेता था. अब तो उसकी आँखें लगभग बंद थीं.

सालाह ने क़दीम के घुटने की हड्डी को छुआ. बार-बार झुकने और भारी सामान पीठ पर लाद कर उठाने से घुटने की हड्डी बढ़ गयी थी. सब ऊंटों के साथ ऐसा ही होता था.

अगर क़दीम को प्रसन्न करने का कोई उपाय होता तो वह गर्व से सिर ऊँचा करके सीधा खड़ा होता.

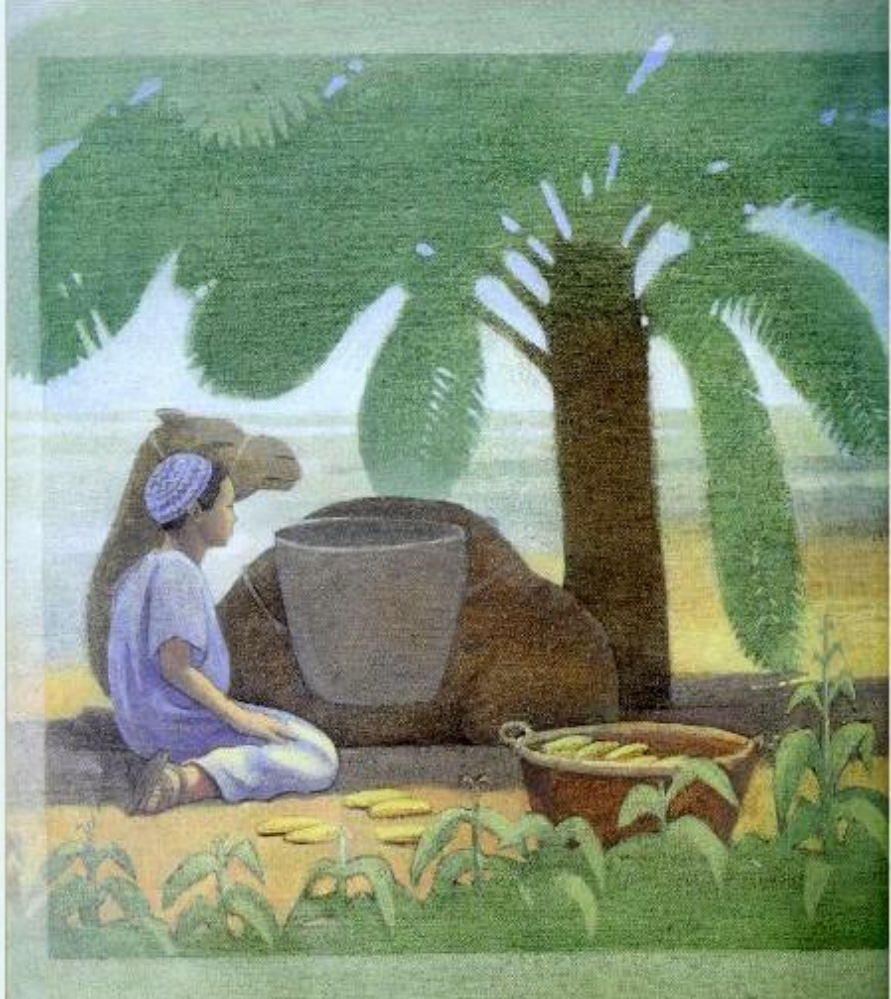

दुपहर का समय था. सालाह के पिता ने भुट्टे तोड़ने बंद कर दिए. क़दीम की पीठ पर बंधा एक गलीचा खोला. वह हर दिन पाँच बार नमाज़ अदा करते थे. कुछ वर्षों बाद सालाह भी ऐसा ही करेगा. लड़के और ऊँट ने उन्हें गलीचे को सम्मान के साथ ज़मीन पर बिछाते देखा. फिर उन्होंने अपने हाथ ऊपर आकाश की ओर उठाये.

"सालाह, प्रार्थना में बहुत शक्ति होती है. यह अल्लाह की देन है. अल्लाह महान है, वह हमारी हर प्रार्थना सुनता है, हर बात समझता है...." इतना कह कर सालाह के पिता ने घुटनों के बल झुक कर गलीचे को माथे से छुआ, फिर लेट कर गलीचे के कोने को चूमा, और खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने लगे.

प्रार्थना में बहुत शक्ति होती है. अल्लाह चाहते हैं कि उसके बनाये सब जीव प्रसन्न रहें. यह बात सालाह के पिता ने उसे कई बार कही थी. अल्लाह कभी नहीं चाहेगा कि एक ऊँट उतना उदास हो जितना क़दीम और अन्य ऊँट उदास थे. काश अल्लाह की मेहरबानी से क़दीम खुश हो पाता!

सालाह के पिता आँखें बंद किये, कमर के पास हाथ जोड़े नमाज़ अदा रहे थे.

जैसे ही नमाज़ पूरी हुई, सालाह कूद कर पिता के पास आया. उसने सोचा कि वह पिता को सब बता देगा.

"अब्बा, मैं उदास हूँ क्योंकि क़दीम उदास है."

"और क़दीम क्यों उदास है?" पिता ने मुस्कराते हुए पूछा. यह लड़का भी! जानवरों को लेकर हमेशा परेशान रहता है. ठीक ही है! दयालु होना तो अच्छा ही होता है. लेकिन इस अड़ियल, बदसूरत और मूर्ख जानवर को लेकर वह कुछ ज़्यादा ही चिंता करता है.

सालाह के पैर के पास एक गिरगिट खूब उछल-कूद कर रही थी. वह पाँव के दूसरी ओर जाने का रास्ता खोज रही थी.

"अब्बा मेरी बात पर आपको हँसी आएगी, लेकिन मुझे लगता है कि क़दीम इसलिये उदास है क्योंकि वह बूढ़ा दिखाई देता है हालंकि मेरे समान उस की उम्र भी सिर्फ सात साल है. गाँव में ऊटों के बिना किसी का काम नहीं चल सकता, लेकिन हर कोई उनका मजाक उड़ाता है. इसी कारण सब ऊँट अपना सर झुका कर रखते हैं और उदास रहते हैं. वह सब ऐसा महसूस कर सकते हैं. मैं जानता हूँ वह करते हैं."

क़दीन ने अपनी आँखें बंद कर लीं और जुगाली करने लगा.

सालाह ने अपने पिता की टांगों को अपनी बाहों में भर लिया और बोला, “ऐसा अवश्य कुछ होगा जिसके करने से क़दीम प्रसन्न हो जाए और गर्व के साथ अपना सिर ऊँचा करके चले.” उसने सिर उठा कर अपने पिता को देखा जो उसे किसी नाव के मस्तूल से ऊपर उठते हुए प्रतीत हुए. सालाह ने अपना पैर इधर-उधर हिलाया और पाँव के पास फुदकती गिरगिट भाग खड़ी हुई. “अब्बा, बिल्कुल आपकी तरह. सब ऊँट प्रसन्न हो जाएँ और गर्व महसूस करें.”

“बेटा, मुझे तुम पर हंसी नहीं आ रही. तुम अपने मन की बात कह रहे हो. लेकिन जिंदगी में हमें सब कुछ नहीं मिलता. क़दीम खजूर के नीचे बैठा आराम करता है. खजूर की पिसी हुई गुठलियों से बनी रोटियाँ खाता है. वह तुम्हारे बिस्तर के पास सोता है. उसे तुम्हारा प्यार मिलता है. ज़रा सोचो.” अपनी टांगों के इर्द-गिर्द लिपटी अपने बेटे की बाहों को खोलकर पिता ज़मीन पर बैठ गये और सालाह को पास खिसका लिया.

"इस धरती पर रहते हुए हम बेचारे इंसान अल्लाह के सिर्फ निन्यानवे नाम ही जान पाते हैं. हालांकि उसके सौ नाम हैं और सौवां नाम ही सबसे ख़ास है. लेकिन क्या इस कारण हम उदास, निराश हो सिर झुका कर रहते हैं? नहीं! हम काम करते हैं, हम खाना खाते हैं, हम एक-दूसरे की परवाह करते हैं. हम उतना प्रसन्न रहने की कोशिश करते हैं जितना प्रसन्न अल्लाह हमें देखना चाहता है." उन्होंने अपने हाथ ऊपर उठाये वैसे ही जैसे नमाज़ पढ़ते समय उठाये थे, "हम प्रार्थना करते हैं." इतना कह सालाह के पिता उठे और खेत में काम करने चले गये.

क़दीम ने अपनी आँखें खोली और सीधा सालाह की ओर देखा. फिर पलकें गिरा कर आँखें बंद कर लीं. सालाह ने भी उसकी ओर एकटक देखा.

देर रात जब घर में सब सो गये थे, सालाह क़दीम के निकट ही लेटा हुआ था. उसके पिता के शब्द उसके कानों में गूँज रहे थे और वह सो न पा रहा था.

प्रार्थना में बहुत शक्ति होती है, मेरे बेटे. यह ऐसा उपहार है जिसका सबको उपयोग करना चाहिये. अल्लाह महान है. वह हमारी बात सुनता है, समझता है. अल्लाह चाहता है कि उसके बनाए सब जीव प्रसन्न रहें. लेकिन हम इंसान उसका सब से खास, सौवां नाम जाने बिना ही जीते हैं और मर जाते हैं.

अगर क़दीम को अल्लाह का सौवां नाम बताया जाए तो?

और अचानक सालाह को सूझा कि उसे क्या करना होगा. क़दीम थोड़ा हिला-डुला. सालाह ने चुपचाप गल्लाबिया पहना.

"सोये रहो," उसने ऊँट से कहा. "मैं जल्दी ही लौट आऊंगा." वह कमरे के उस कोने में रेंगता हुआ गया जहां उसके पिता का गलीचा रखा था, जिस पर बैठ वह नमाज़ अदा करते थे.

बाहर आकाश में नया चाँद किसी भैंस के सींग जैसा दिखाई दे रहा था. सालाह कंधे पर गलीचा उठाये झटपट नदी की ओर चला.

नदी के पास गूलर के पेड़ की डालियाँ सोये हुए बगुलों के बोझ से नीचे झुकी हुईं थीं. सालाह ने गलीचा ज़मीन पर बिछाया. फिर, जैसे उसने पिता को कई बार करते देखा था, उसने प्रार्थना की. उसका पतला शारीर बड़े आकर्षक ढंग से आगे-पीछे घूम रहा था ऐसा दिखता था कि वह सारा जीवन ऐसे ही नमाज़ अदा करता आया था.

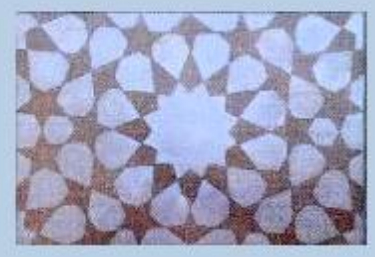

View Page n9

उसने पूरी तन्मयता से अल्लाह से प्रार्थना की.

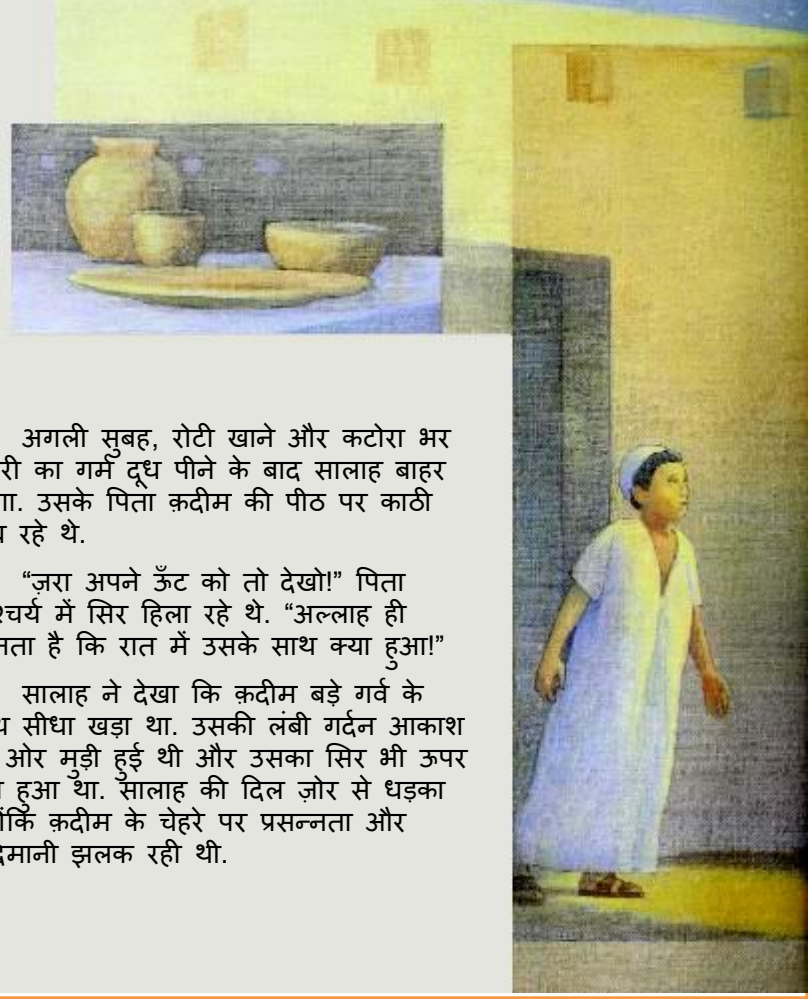

अगली सुबह, रोटी खाने और कटोरा भर बकरी का गर्म दूध पीने के बाद सालाह बाहर भागा. उसके पिता क़दीम की पीठ पर काठी बाँध रहे थे.

“ज़रा अपने ऊँट को तो देखो!” पिता आश्चर्य में सिर हिला रहे थे. “अल्लाह ही जानता है कि रात में उसके साथ क्या हुआ!”

सालाह ने देखा कि क़दीम बड़े गर्व के साथ सीधा खड़ा था. उसकी लंबी गर्दन आकाश की ओर मुड़ी हुई थी और उसका सिर भी ऊपर उठा हुआ था. सालाह की दिल ज़ोर से धड़का क्योंकि क़दीम के चेहरे पर प्रसन्नता और बुद्धिमानी झलक रही थी.

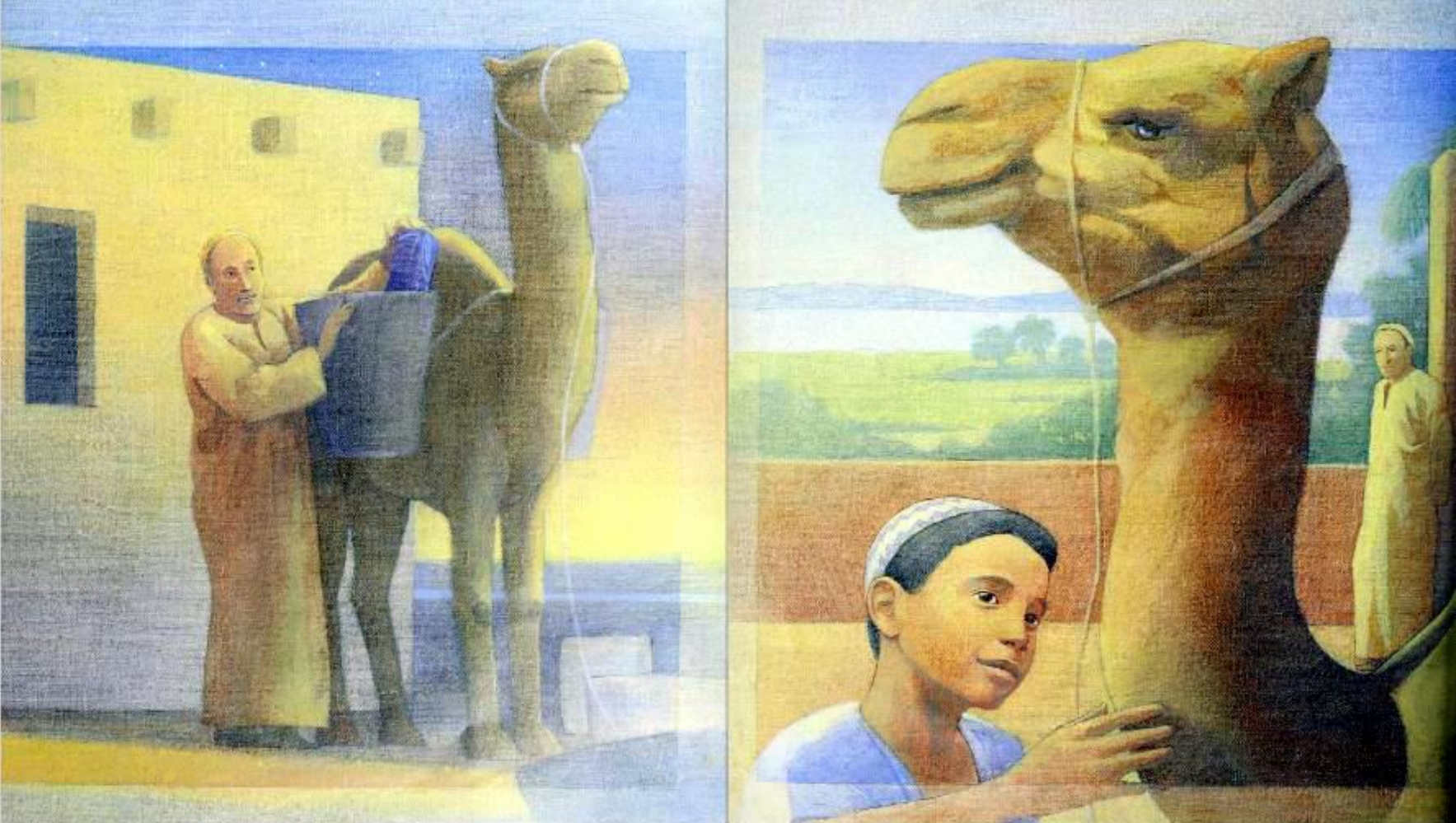

सालाह ने धीमे से क़दीम से कहा, “तुम जानते हो.... नाम?” फिर आवाज़ और धीमी कर कहा, “अल्लाह का सौवां नाम?”

ऊँट की बड़ी-बड़ी पलकें झुक गयीं.

“लेकिन तुम किसी को बताओगे नहीं. मैंने अल्लाह को वचन दिया था!”

क़दीम ने बहुत धीरे से गर्दन हिला कर हामी भरी.

“सिर्फ दूसरे ऊंटों को बताना!”

सालाह के पिता ने उसके गाल को धीरे से थपथपाया. “साथ जाओ. मुझे यहाँ बगीचे की सफाई करनी है. सलाम. तुम दोनों प्रसन्न मन से जाओ.”

वह मुस्कराए. “जो कुछ भी क़दीम के साथ रात में हुआ, अल्लाह की मेहरबानी है. अल्लाहु-अकबर”

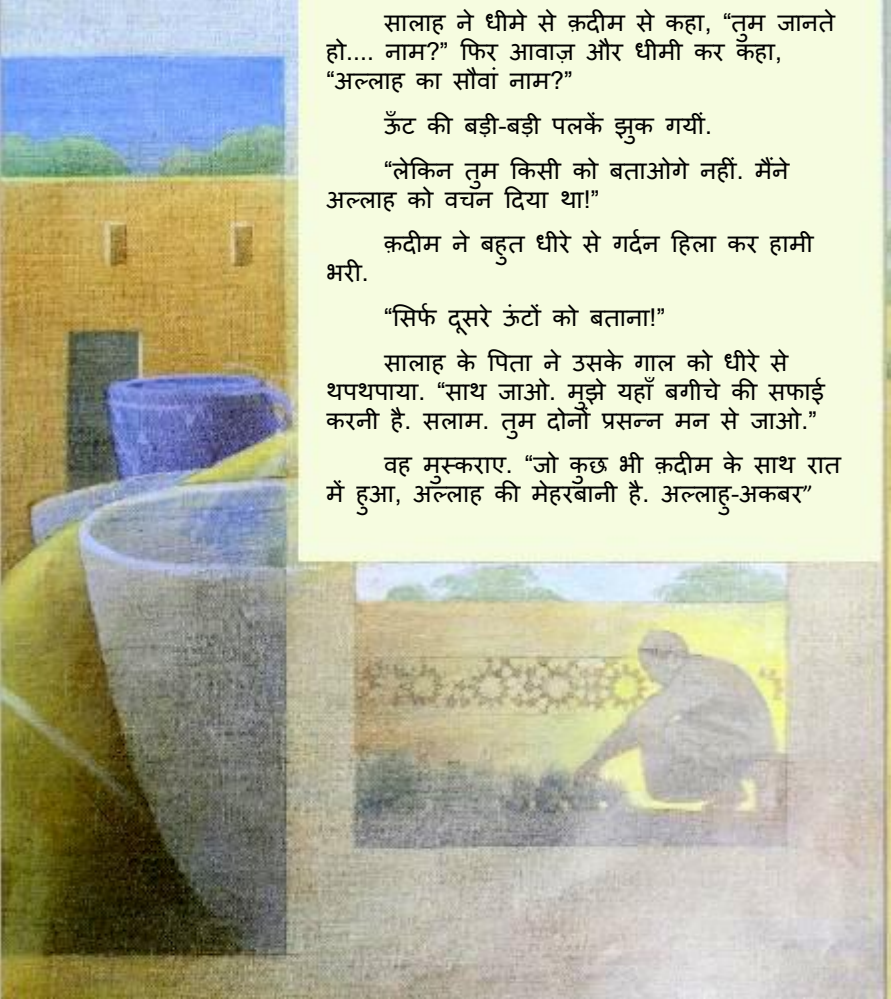

क़दीम खेत की ओर चला. उसके क़दमों में एक स्फूर्ति थी, वह लगभग भाग ही रहा था. ऊँट की गर्दन पर एक हाथ रखे सालाह उसके साथ ही भाग रहा था.

मैं जानता हूँ कि क़दीम ऐसा क्यों दिख रहा है. हम इंसान अल्लाह के सिर्फ निन्यानवे नाम जानते हैं लेकिन ऊँट सौवां नाम भी जानता है और उसने यह नाम किसी को नहीं बताया.

समाप्त